प्रतिदर्श प्रश्न पत्र 14 (2019–20)

हिन्दी – अ (कोड–002)

कक्षा– 10

निर्धारित समय– 3 घंटे **अधिकतम अंक – 80**

सामान्य निर्देशः–

1. इस प्रश्न–पत्र में चार खंड हैं– क, ख, ग और घ।
2. सभी खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. यथासंभव प्रत्येक खंड के प्रश्नों के उत्तर क्रम से लिखिए।
4. एक अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 15–20 शब्दों में लिखिए।
5. दो अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 30–40 शब्दों में लिखिए।
6. तीन अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 60–70 शब्दों में लिखिए।

खण्ड–क (अपठित अंश) 10

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िये और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 10

बातचीत का भी एक विशेष प्रकार का आनंद होता है। जिनको इस आनंद को भोगने की आदत पड़ जाती है, वे इसके लिए अपना खाना–पीना तक छोड़ देते हैं, अपना और नुकसान कर लेते हैं, लेकिन बातचीत से प्राप्त आनंद को नहीं खोना चाहते। जिनसे केवल पत्र–व्यवहार है, कभी एक बार भी साक्षात्कार नहीं हुआ, उन्हें अपने प्रेमी से बात करने की अत्यधिक लालसा रहती है। अपने मन के भावों को दूसरों के सम्मुख प्रकट करने की और दूसरों के अभिप्राय को स्वयं ग्रहण करने का एकमात्र साधन शब्द ही है।

बेन जानसन का यह कथन उचित प्रतीत होता है कि "बोलने से ही मनुष्य के रूप का साक्षात्कार होता है।" बातचीत की सीमा दो से लेकर वहाँ तक रखी जा सकती है जितनों की जमात, मीटिंग या सभा न समझ ली जाए। एडिसन का मत है कि असल बातचीत सिर्फ दो में हो सकती है। जब तीन हुए तब वह दो की बात कोसों दूर चली जाती है। चार से अधिक की बातचीत केवल राम–रमौवल कहलाती है, इसलिए जब दो आदमी परस्पर बैठे बातें कर रहे हों और तीसरा वहाँ आ जाए तो वे दोनों निरस्त बैठ जाते हैं या फिर तीसरे को निपट मुर्ख और अज्ञानी समझ बनाने लगते हैं।

इस बातचीत के अनेक भेद हैं। दो बुड्ढों की बातचीत प्रायः जमाने की शिकायत पर हुआ करती हैं। नौजवानों की बातचीत का विषय जोश, उत्साह, नई उमंग, नया हौसला आदि होता है।

1. बातचीत की आदत के कारण लोग कैसा व्यवहार करते हैं? 2

उत्तर : बातचीत की आदत के कारण लोग खाना–पीना तक छोड़ देते हैं, अपना नुकसान कर लेते हैं लेकिन किसी भी हालत में बातचीत से प्राप्त आनंद को खोना नहीं चाहते।

2. शब्द किसका साधन है? 2

उत्तर : अपने मन के भावों को दूसरों के सम्मुख प्रकट करने की और दूसरों के अभिप्राय को स्वयं ग्रहण करने का एकमात्र साधन शब्द ही है।

3. असली बातचीत किसे और क्यों माना जाना चाहिए? 2

उत्तर : असली बातचीत केवल दो लोगों में ही हो सकती है– ऐसा एडिसन का मत है। जब तीन हुए तब दो की बात कोसों दूर चली जाती है। चार से अधिक केवल राम–रमौवल कहलाती है।

4. बेन जानसन का कथन क्या है? और वह क्यों उचित समझा गया? 2

उत्तर : बेन जानसन का कथन है कि "बोलने से ही मनुष्य के रूप का साक्षात्कार होता है।" जैसे कागा और कोयल आकार एवं रंग रूप में समान होते हैं परंतु बोलने पर उनका अंतर स्पष्ट हो जाता है। उसी प्रकार बोली से मानव की सभ्यता का पता चलता है।

5. 'साक्षात्कार'– इसका अर्थ स्पष्ट करते हुए वाक्य लिखिए। 1

उत्तर : कल के अखबार में मेरा 'साक्षात्कार' छपेगा, उसे जरूर पढ़ना।

6. उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर : बातचीत।

खण्ड–ख (व्यावहारिक व्याकरण) 16

2. निर्देशानुसार उत्तर लिखिए। $1 \times 4 = 4$

1. उसके पास जो कुछ था, वह खो गया। (सरल वाक्य में बदलिए)

उत्तर : उसका सब कुछ खो गया।

2. सूर्य के छिपने पर अंधेरा छा गया। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)
उत्तर : सूर्य छिपा और अंधेरा छा गया।
3. कमाने वाला खाएगा। (मिश्र वाक्य में बदलिए)
उत्तर : जो कमाएगा, वह खाएगा।
4. वह मुंबई गया और उसने वहाँ जाकर नया व्यापार शुरू किया। (सरल वाक्य में बदलिए)
उत्तर : मुंबई जाकर उसने वहाँ नया व्यापार शुरू किया।

3. निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तन कीजिए। $1 \times 4 = 4$

1. अनेक चित्रकारों द्वारा सुंदर चित्र बनाए गए हैं। (कर्तृवाच्य में बदलिए)
उत्तर : अनेक चित्रकारों ने सुंदर चित्र बनाए।
2. पक्षी आकाश में उड़ते हैं। (भाववाच्य में बदलिए)
उत्तर : पक्षियों द्वारा आकाश में उड़ा जाता है।
3. भारत ने नया उपग्रह छोड़ा। (कर्मवाच्य में बदलिए)
उत्तर : भारत द्वारा नया उपग्रह छोड़ा गया।
4. वह नहीं दौड़ता। (भाववाच्य में बदलिए)
उत्तर : उससे दौड़ा नहीं जाता।

4. निम्नलिखित वाक्यों के रेखांकित पदों का पद-परिचय लिखिए। $1 \times 4 = 4$

1. आश्रय दसवीं कक्षा में पढ़ता है।
उत्तर : विशेषण, क्रमसूचक-संख्यावाचक स्त्रीलिंग, एकवचन, 'कक्षा' विशेष्य का विशेषण।
2. काला घोड़ा तेज भागता है।
उत्तर : गुणवाचक विशेषण, एकवचन, पुल्लिंग, 'घोड़ा' विशेष्य है।
3. यह छात्रा बहुत चतुर है।
उत्तर : सार्वनामिक विशेषण, पुल्लिंग, एकवचन।
4. भूषण वीर रस के कवि थे।
उत्तर : संज्ञा, व्यक्तिवाचक, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ताकारक 'थे' क्रिया का कर्ता।

5. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए। $1 \times 4 = 4$

1. रौद्र रस का स्थायी भाव क्या है?
उत्तर : रौद्र रस का स्थायी भाव 'क्रोध' है।
2. निम्न काव्यांश में निहित रस बताइए।
"हाय राम कैसे झेलें हम अपनी लज्जा अपना शोक।
गया हमारे ही हाथों से अपना राष्ट्रपिता परलोक।।"
उत्तर : करुण रस।
3. निम्नलिखित पंक्ति में कौन-सा रस-भेद है? लिखिए-
वह खून कहो किस मतलब का, जिसमें उबाल का नाम नहीं।
वह खून कहो किस मतलब का, आ सके देश के काम नहीं।
उत्तर : वीर रस।
4. 'शृंगार रस' का एक उदाहरण लिखिए।
उत्तर : बतरस लालच लाल की मुरली धरी लुकाय,
सौंह करे भौंहन हँसे देन कहे नटि जाय।। (संयोग शृंगार रस का उदाहरण)
5. किलकत कान्ह घुटरुवन आवत- पंक्ति में कौन-सा रस है? लिखिए।
उत्तर : वात्सल्य रस।

खण्ड-ग 34

(पाठ्य-पुस्तक एवं पूरक पाठ्य-पुस्तक)

6. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- 6

बेटे के क्रिया-कर्म में तूल नहीं किया, पतोहू से आग दिलाई उसकी। किंतु ज्योंहि श्राद्ध की अवधि पूरी हो गई, पतोहू के भाई को बुलाकर उसके साथ भेज दिया, यह आदेश देते हुए कि इसकी दूसरी शादी कर देना। इधर पतोहू रो-रो कर कहती- मैं चली जाऊँगी तो बुढ़ापे में कौन आपके लिए भोजन बनाएगा, बीमार पड़े तो कौन एक चुल्लू पानी भी देगा? मैं पैर पड़ती हूँ, मुझे अपने चरणों से अलग नहीं कीजिए। लेकिन भगत का निर्णय अटल था। तू जा, नहीं तो मैं ही इस घर को छोड़कर चल दूँगा। यह थी उनकी आखिरी दलील और इस दलील के आगे बेचारी की क्या चलती?

1. बालगोबिन भगत ने अपनी पुत्रवधू को अपने पुत्र की मृत्यु के बाद कहाँ भेज दिया और किस उद्देश्य से? स्पष्ट कीजिए।2
उत्तर : बालगोबिन भगत ने पुत्र की मृत्यु के बाद अपनी पुत्रवधू को उसके भाई के साथ मायके भेज दिया। वे चाहते थे कि उसका भाई कोई अच्छा-सा वर और घर देखकर उसका पुनर्विवाह कर दे।
2. भगत जी की पुत्रवधू ने उनसे क्या प्रार्थना की? 2
उत्तर : भगत जी की पुत्रवधू ने उनसे प्रार्थना की वे उसे घर से जाने के लिए न कहें। वे जीवन-भर उनके बुढ़ापे की लाठी बनना चाहती है, उनकी सेवा करना चाहती है।
3. भगत जी द्वारा पुत्र का दाह-संस्कार पतोहू से ही कराने तथा विधवा बहू की दूसरी शादी रचाने के निर्देश में उनकी किस विचारधारा का परिचय मिलता है? 2
उत्तर : बालगोबिन भगत ने अपनी पुत्रवधू से ही अपने पुत्र का दाह-संस्कार कराया तथा उसका दूसरा विवाह रचाने का आदेश दिया। इससे स्पष्ट होता है कि बालगोबिन के विचार आधुनिक थे। वे व्यर्थ के आडंबरों के विरोधी थे और नारी को पुरुष के समान मानते थे।

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 30–40 शब्दों में लिखिए– $2 \times 4 = 8$

1. हालदार एक भावुक और देशप्रेमी इंसान थे– उदाहरण देकर सिद्ध कीजिए।

उत्तर : हालदार एक भावुक और देशप्रेमी व्यक्ति थे। वे कस्बे के चौक में लगी सुभाषचन्द्र बोस की मूर्ति लगे देखकर भावुक हो उठते थे। उस मूर्ति को देखकर उन्हें सुभाषचन्द्र बोस की देशभक्ति याद आ जाती थी। जब वे देखते थे कि कस्बे का एक चश्मेवाला उस मूर्ति पर तरह–तरह के चश्में बदलता रहता है तो वे कौतूहल से भर उठे। उसकी देशभक्ति देखकर श्रद्धा से भर गए। उसके मरने के बाद कस्बे के बच्चों ने सरकंडे का चश्मा लगा दिया तो वे और भी भावुक हो उठे।

2. 'लखनवी अंदाज' पाठ का यह शीर्षक क्यों दिया गया?

उत्तर : 'लखनवी अंदाज' शीर्षक व्यंग्य से भरपुर है। इसमें सूक्ष्मता, कोमलता और शान–बान के नाम पर जीवन की सहजता को नकारने का विरोध किया गया है। लेखक कहना चाहता है कि ये लखनवी नवाब खीरे के भोग के नाम पर केवल उसकी गंध और स्वाद लेते हैं। वे इसी में अपनी शान और विशिष्टता मानते हैं। परंतु उनका यह अंदाज अवास्तविक और जीवन–विरोधी है। इस विरोध को प्रकट करने के लिए 'लखनवी अंदाज' शीर्षक सार्थक बन पड़ा है।

3. फादर की मृत्यु का कारण क्या था? लेखक ने ऐसी मृत्यु को अनुचित क्यों कहा है?

उत्तर : फादर कामिल बुल्के जहरबाद से मरे। लेखक को फादर जैसे मधुर, उदार मीठे, आस्थावान व्यक्तित्व का जीवन के अंत में जहरबाद से मरना अनुचित लगा।

4. 'एक कहानी यह भी' में लेखिका की माँ को 'व्यक्तित्वविहीन' क्यों कहा गया है? इससे माँ की किस महिमा का आभास मिलता है?

उत्तर : 'एक कहानी यह भी' में लेखिका ने अपनी माँ को 'व्यक्तित्वविहीन' कहा है। वास्तव में, यह भी विशेषण माँ की महिमा का परिचायक है, उसकी कमजोरी का नहीं। लेखिका की माँ अपने पति और बच्चों की इच्छा को पूरा करना अपना धर्म मानती थी। इसलिए वह उन सबके लिए बराबर त्याग किए चली जाती थी। यदि उसका पति उस पर अनुचित दबाव डालता था तो वह उसे भी भाग्य मानकर स्वीकार किए जाती थी। लेखिका को माँ की यह लाचारी पसंद नहीं थी, इसलिए वह उसे व्यक्तित्वविहीन कहती है।

5. काशी में हो रहे कौन–से परिवर्तन बिस्मिल्ला खाँ को व्यथित करते थे?

उत्तर : काशी में पुरानी परंपराएँ लुप्त हो रही हैं। खान–पान की पुरानी चीजें और विशेषताएँ नष्ट होती जा रही हैं। मलाई–बरफ वाले गायब हो गए हैं। कुलसुम की छन्न करती संगीतात्मक कचौड़ी और देशी घी की जलेबी आज नहीं रही। न ही आज संगीत, साहित्य और अदब का वैसा सम्मान नहीं रहा। ये सब बातें बिस्मिल्ला खाँ को व्यथित करती हैं।

8. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 6

कितना प्रामाणिक था उसका दुख
लड़की को दान में देते वक्त
जैसे वही उसकी अंतिम पूँजी हो
लड़की अभी सयानी नहीं थी
अभी इतनी भोली सरल थी
कि उसे सुख का आभास तो होता था
लेकिन दुख बाँचना नहीं आता था
पाठिका थी वह धुँधले प्रकाश की
कुछ तुकों और कुछ लयबद्ध पंक्तियों की
माँ ने कहा पानी में झाँककर
अपने चेहरे पर मत रीझना
आग रोटियाँ सेंकने के लिए है
जलने के लिए नहीं
वस्त्र और आभूषण शाब्दिक भ्रमों की तरह
बंधन हैं स्त्री जीवन के
माँ ने कहा लड़की होना
पर लड़की जैसी दिखाई मत देना।

1. 'पाठिका थी वह धुँधले प्रकाश की' से कवि का क्या तात्पर्य है? 2

उत्तर : इसका तात्पर्य यह है लड़की विवाह की वास्तविकताओं से अधिक परिचित नहीं है। वह बहुत कम जानती है। वह सिर्फ उसके सुखों की कुछ–कुछ कल्पना तो किया करती थी पर दुखों से पूर्ण रूप से अनभिज्ञ थी।

2. माँ को अपनी बेटी 'अंतिम पूँजी' क्यों लग रही थी? 2

उत्तर : माँ को अपनी बेटी 'अंतिम पूँजी' इसलिए लग रही थी क्योंकि वह अपनी बेटी से ही अपने सुख–दुख साँझे कर लेती है। इसलिए उसका सर्वस्व ही उसकी बेटी है और उसके जाने पर उसे लग रहा है मानों उसकी अंतिम पूँजी भी दूर हो रही है। कन्यादान के बाद वह बिल्कुल अकेली रह जाएगी।

3. किसके दुख को प्रामाणिक बताया गया है? 2

उत्तर : इसमें कन्यादान करने वाली माँ के दुख को प्रामाणिक बताया गया है। माँ को चिन्ता होती है कि उसकी बेटी ससुराल में किस प्रकार अपनी जगह बना पाएगी।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 30–40 शब्दों में लिखिए– $2 \times 4 = 8$

1. परशुराम के गुरु कौन थे? वे गुरु ऋण से कैसे उऋण होना चाहते थे?

उत्तर : परशुराम के गुरु भगवान शिव थे। परशुराम अपने गुरु शिव का धनुष तोड़ने वाले का वध करके गुरु के ऋण से उऋण होना चाहते थे।

2. नागार्जुन फसल को किस रूप में देखते हैं?

उत्तर : नागार्जुन के अनुसार फसलें, पानी, मिट्टी, धूप, हवा और मानव–श्रम के मेल से बनी हैं। इनमें सभी नदियों के पानी का जादू समाया हुआ है। सभी प्रकार की मिट्टियों का गुण–धर्म निहित हैं सूरज और हवा का प्रभाव समाया हुआ है। इन सबके साथ किसानों और मजदूरों का श्रम भी सम्मिलित है।

3. गोपियाँ कृष्ण से क्यों नाराज थीं?

उत्तर : गोपियाँ श्रीकृष्ण से इसलिए नाराज थीं क्योंकि कृष्ण ने गोपियों को बहुत प्रतीक्षा कराई। जब आने का समय आया तो उन्होंने स्वयं न आकर उद्धव को भेज दिया जिसने उनके साथ कृष्ण की बातें करने की बजाय योग संदेश की बातें करना आरंभ कर दिया।

4. 'छाया मत छूना' कविता में किन जीवन–मूल्यों को अपनाने की प्रेरणा दी गई है?

उत्तर : इस कविता में प्रेरणा दी गई है कि जीवन में जो भी परिस्थितियाँ हों, उन्हीं के अनुसार जीना चाहिए। पुरानी यादों में नहीं खोए रहना चाहिए। बेकार के सपनों में भी समय नहीं गँवाना चाहिए।

5. 'उत्साह' कविता में कवि बादलों से क्या अनुरोध करता है और क्यों?

उत्तर : कवि बादलों को क्रांति का सूत्रधार मानता है। वह उससे पौरुष दिखाने की कामना करता है। इसलिए वह उसे गरजने–बरसने के लिए बुलाता है, न कि फुहार छोड़ने, रिमझिम बरसने या केवल बरसने के लिए। कवि तापों और दुखों को दूर करने के लिए क्रांतिकारी शक्ति की अपेक्षा करता है।

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60–70 शब्दों में लिखिए– $3 \times 2 = 6$

1. बच्चे माता–पिता के प्रति अपने प्रेम को कैसे अभिव्यक्त करते हैं?

उत्तर : बच्चे माता–पिता के प्रति अपने प्रेम को उनके साथ रहकर, उनकी सिखाई हुई बातों में रुचि लेकर, उनके साथ खेलकर, उन्हें गले लगाकर, उनकी गोद में बैठकर या उन्हें चूमकर प्रकट करते हैं। वे उन्हें अपने समीप पाकर ही प्रसन्न हो जाते हैं तथा उनसे लिपट कर अपना प्रेम प्रदर्शित करते हैं।

2. 'जॉर्ज पंचम की नाक' पाठ में नाक शब्द के माध्यम से किस बात पर व्यंग्य किया गया है? इसके आधार पर हमारे जीवन मूल्यों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर : इस पाठ में 'नाक' सम्मान और प्रतिष्ठा का प्रतीक है। जॉर्ज पंचम की मूर्ति की नाक कटने का आशय है– उनके द्वारा भारत पर अत्याचार किए गए, भारत को उन्होंने गुलाम बनाए रखा। फिर भी भारतीय नेता उनके सम्मान की रक्षा करना चाहते हैं। इसके पीछे यदि कोई अच्छी बात है, जीवन–मूल्य हैं तो वह यही है कि हम घर आने पर अपने शत्रुओं का भी सम्मान करना जानते हैं।

3. 'कटाओ भारत का स्विट्जरलैंड है'– इस कथन पर लेखिका की सहयात्री मणि को क्या आपत्ति थी?

उत्तर : कटाओ सिक्किम का एक अनजान–सा, किंतु बेहद खूबसूरत स्थान है। गाइड जितेन ने कहा कि– कटाओं भारत का स्विट्जरलैंड है, तो लेखिका की सहयात्री मणि ने इस पर आपत्ति की, क्योंकि वह स्विट्जरलैंड घूम चुकी थी। उसने प्रतिवाद करते हुए कहा कि एक तो स्विट्जरलैंड इतनी ऊँचाई पर नहीं है और दूसरा वह इतना खूबसूरत भी नहीं है, जितना कि कटाओ।

खण्ड–घ (लेखन) 20

11. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 200 से 250 शब्दों में निबंध लिखिए– 10

(1) स्वावलंबन

संकेत–बिंदु : ✲ भूमिका ✲ स्वावलंबन की महत्ता ✲ प्रसिद्ध व्यक्तियों के उदाहरण ✲ उपसंहार।

(2) यदि मैं भारत का प्रधानमंत्री होता

संकेत–बिंदु : ✲ भूमिका ✲ मेरी प्राथमिकताएँ (शिक्षा का प्रसार, आतंकवाद की समाप्ति, भ्रष्टाचार उन्मूलन, आर्थिक चुनौतियों का समाधान) ✲ उपसंहार

(3) करत–करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान

संकेत–बिंदु : ✲ भूमिका ✲ निरंतर अभ्यास की महिमा ✲ अभ्यास : व्यक्तित्व विकास में सहायक ✲ उपसंहार

उत्तर :

(1) स्वावलंबन

संकेत–बिंदु : ✲ भूमिका ✲ स्वावलंबन की महत्ता ✲ प्रसिद्ध व्यक्तियों के उदाहरण ✲ उपसंहार।

भूमिका– मानवीय जीवन में सफलता के शिखर तक पहुँचने हेतु स्वावलंबन को आवश्यक तत्व माना जाता है। परावलंबी व्यक्ति उस लता के समान होता है, जो न केवल पेड़ के सहारे ऊपर बढ़ती है, बल्कि वह परजीवी भी होती है।

स्वावलंबन की महत्ता– स्वावलंबन के अभाव में व्यक्ति न किसी बड़े उद्देश्य को प्राप्त कर पाता है, बल्कि वह अपने व्यक्तित्व की चमक भी पूर्ण रूप से खो देता है।

"राम सहायक उनके होते,
जो होते हैं आप सहायक।।"

स्वावलंबन के दो पहलू हैं– अपना काम स्वयं करना और आत्म निश्चय। विश्व में जितने भी महापुरुष उत्पन्न हुए हैं, महान नायक, महान नेता, महान व्यवसायी, महान वैज्ञानिक, महान रचनाकार आदि, सभी ने अपना मार्ग स्वयं निश्चित किया है। अपनी शक्तिशाली भुजाओं पर विश्वास करके ही उन्होंने बड़े–बड़े कार्य किए। जिन गुणों ने उन्हें सफलता के शिखर पर पहुँचाया, उनमें से एक स्वावलंबन भी था। इसी

स्वावलंबन के बल पर उन्होंने बड़े-बड़े साम्राज्यों और सिद्धांतों की आधारशिला रखी और अक्षय कीर्ति अर्जित की।

प्रसिद्ध व्यक्तियों के उदाहरण- स्वामी विवेकानंद, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, महात्मा गांधी, बेंजामिन फ्रैंकलिन, नेपोलियन, अब्राहम लिंकन, न्यूटन आदि न जाने कितने अनगिनत नाम हैं, जिनके व्यक्तित्व की एक महत्वपूर्ण विशेषता स्वावलंबन थी। दशरथ पुत्र राम ने भी स्वयं अपनी शक्ति के सहारे ही शक्तिशाली रावण को पराजित करके अपनी एवं अपनी पत्नी सीता की मर्यादा को बचाया। इसके लिए उन्होंने अयोध्या की विशाल सेना का सहारा नहीं लिया।

उपसंहार- जो व्यक्ति अपनी शक्ति पर विश्वास रखकर अपने कार्य में अग्रसर नहीं होता है, उसकी पराजय निश्चित होती है। अंग्रेजी में एक प्रसिद्ध कहावत है कि 'पतन से भी बड़ा पतन यह है कि किसी को सबसे पहले स्वयं पर ही विश्वास न हो' वास्तव में, स्वावलंबन ही जीवन है, जबकि परावलंबन मृत्यु के समान है। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने ठीक ही लिखा है कि

"यह पापपूर्ण परावलंबन चूर्ण होकर दूर हो,
फिर स्वावलंबन का हमें प्रिय पुण्य पाठ पढ़ाइए।"

(2) यदि मैं भारत का प्रधानमंत्री होता

संकेत-बिंदु : ✲ भूमिका ✲ मेरी प्राथमिकताएँ (शिक्षा का प्रसार, आतंकवाद की समाप्ति, भ्रष्टाचार उन्मूलन, आर्थिक चुनौतियों का समाधान) ✲ उपसंहार

भूमिका- भारत में प्रधानमंत्री का पद अति महत्वपूर्ण है। प्रधानमंत्री के पद पर सुशोभित होना निश्चय ही गौरव का विषय है। यह पद जितना महत्वपूर्ण है, उतना ही अधिक जिम्मेदारी भरा भी। मेरा मन भी इस पद के लिए लालायित रहता है।

मेरी प्राथमिकताएँ- यदि मैं भारत का प्रधानमंत्री होता, तो अपनी इन आशाओं पर बिल्कुल खरा उतरने की पूरी कोशिश करता।

भारत के प्रधानमंत्री के रूप में मेरी प्राथमिकताएँ निम्न होतीं-

1. **शिक्षा का प्रसार-** शिक्षित नागरिक ही राष्ट्र की सच्ची पूँजी होते हैं। इसलिए सर्वप्रथम मैं शिक्षा के उचित प्रसार पर ध्यान देता तथा इस बात का भी ध्यान रखता कि शिक्षा में विज्ञान, प्रौद्योगिकी, व्यावसायिकता आदि के साथ-साथ नैतिक मूल्यों का भी समावेश हो, जिससे सही अर्थो में शिक्षित नागरिक तैयार हो सकें।
2. **आतंकवाद की समाप्ति-** आतंकवाद से जहाँ एक ओर नागरिकों में असुरक्षा की भावना जन्म लेती है, वहीं दूसरी ओर इसका देश की आर्थिक गतिविधियों पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है और राष्ट्र का विकास बाधित होता है। इसके लिए मैं जल, थल और वायु, तीनों सेनाओं की सामरिक शक्ति में बढ़ोतरी करता, जिससे कोई भी हमारे देश की ओर आँख उठाकर देखने की चेष्टा न कर सके।
3. **भ्रष्टाचार उन्मूलन-** भ्रष्टाचार से राष्ट्र को आर्थिक क्षति के साथ-साथ, नैतिक तथा चारित्रिक आघात भी सहना पड़ता है, इसलिए मैं अपने चरित्र को भी शुद्ध रखता तथा दूसरों के चरित्र को भी शुद्ध करने के लिए कठोर नियमों को लागू करता।
4. **आर्थिक चुनौतियों का समाधान-** वर्तमान समय में आर्थिक विषमता, महँगाई, गरीबी, बेरोजगारी, औद्योगीकरण की मंद प्रक्रिया आदि भारत के आर्थिक विकास की कुछ मुख्य चुनौतियाँ हैं। प्रधानमंत्री के रूप में मैं इन चुनौतियों का समाधान करने की कोशिश करता।

उपसंहार- इस प्रकार स्पष्ट है कि यदि मैं भारत का प्रधानमंत्री होता, तो देश एवं देश की जनता को सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं शैक्षिक स्तर पर सुदृढ़ कर भारत को पूर्णतः विकसित ही नहीं, बल्कि खुशहाल देश बनाने का अपना सपना साकार करता।

(3) करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान

संकेत-बिंदु : ✲ भूमिका ✲ निरंतर अभ्यास की महिमा ✲ अभ्यास : व्यक्तित्व विकास में सहायक ✲ उपसंहार

भूमिका- निरंतर अभ्यास का महत्व सर्वविदित है। जीवन का कोई भी क्षेत्र हो व्यक्ति उसमें उच्चता एवं सर्वश्रेष्ठता तब ही प्राप्त कर सकता है जब उसके लिए उसमें आवश्यक गुण एवं कुशलताएँ हों और इन्हें अर्जित करना अभ्यास पर निर्भर है। अभ्यास से सफलता निकट से निकटतर होती जाती है और असंभव से दिखने वाले कार्य भी संभव हो जाते हैं।

निरंतर अभ्यास की महिमा- निरंतर अभ्यास की महिमा बताते हुए कहा गया है कि

'करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात ते सिल पर परत निसान।।'

अर्थात् जिस प्रकार कोमल रस्सी निरंतर रगड़ से कठोर पाषाण पर भी अपने निशान बना देती है, ठीक उसी प्रकार मूर्ख व्यक्ति भी निरंतर अभ्यास के द्वारा विद्वान बन सकता है। निरंतर अभ्यास के प्रभाव से ही प्रारंभ में अत्यधिक मूर्ख के रूप में चर्चित कालिदास ने स्वयं को विद्वानों के सिरमौर के रूप में स्थापित कर लिया।

कहने का तात्पर्य यह है कि अभ्यास के द्वारा ही जीवन में उच्चता तथा श्रेष्ठता को प्राप्त किया जा सकता है। किसी भी काम को निरंतर करते रहने से किसी व्यक्ति की कुशलता में अत्यधिक वृद्धि होती है, उसकी उस क्षेत्र में पकड़ मजबूत होती है और धीरे-धीरे उसके कार्य में उत्कृष्टता बढ़ती जाती है।

अभ्यास : व्यक्तित्व विकास में सहायक- अभ्यास व्यक्ति के व्यक्तित्व विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है तथा व्यक्ति में उद्यमशीलता का गुण विकसित करता है, जिससे वह कठिन-से-कठिन परिस्थितियों पर भी नियंत्रण कर लेता है। वह जीवन में आने वाली अनेक बाधाओं का दृढ़ता से सामना

करता है, इसलिए निरंतर अभ्यास की महत्ता को समझते हुए अपनी बुद्धि तथा गुणों का विकास करते रहना चाहिए।

बिना अभ्यास के श्रेष्ठ–से–श्रेष्ठ हथियार भी धारहीन हो जाते हैं। मूर्ख व्यक्ति की बात तो छोड़ ही दीजिए, बुद्धिमान व्यक्ति भी अभ्यास के बिना अपने गुणों का विकास नहीं कर पाते।

उपसंहार– अभ्यास व्यक्ति को कर्तव्य पथ की ओर ले जाता है। निरंतर अभ्यास सफलता के मार्ग में आने वाली कठिनाइयों का दमन करने का सामर्थ्य प्रदान करता है और लक्ष्य प्राप्ति में सहायता करता है। हमें यह बात सदैव ध्यान रखनी चाहिए कि पुरुषार्थी मनुष्य ही समय के पन्नों पर अपनी छाप छोड़ते हैं, जिसमें अभ्यास करने अर्थात् परिश्रम की क्षमता का अभाव है, वह जीवन को कोसता हुआ जीवन व्यतीत करता है। अतः हमें अभ्यास का साथ कभी नहीं छोड़ना चाहिए।

12. राष्ट्रपति द्वारा 'वीर बालक पुरस्कार' से सम्मानित अपने छोटे भाई को बधाई–पत्र लगभग 80–100 शब्दों में लिखिए। 5

उत्तर :

4/120, नया बाजार
रोहतक
दिनांक– 22 नवंबर, 2019
प्रिय आशीष

शुभाशीर्वाद

आज के समाचार–पत्र में तुम्हारा चित्र देखकर तथा यह पढ़कर हृदय असीम प्रसन्नता से भर गया कि तुम्हें राष्ट्रपति द्वारा 'वीर बालक पुरस्कार' से सम्मानित किया गया है। मैं तुम्हें इस पुरस्कार प्राप्ति के लिए हार्दिक बधाई देती हूँ।

तुमने यह पुरस्कार प्राप्त कर हमारे परिवार के गौरव को बढ़ाया है। हम सबका मस्तिष्क ऊँचा उठाया है। तुमने जिस बहादुरी से नन्हें–नन्हें बच्चों की जान बचाई थी, वह घटना निश्चय ही अदम्य वीरता व साहस का परिचायक है। मैं आशा करती हूँ कि ईश्वर तुम्हें हर कार्य में सफलता दे। पुनः एक बार बधाई व शुभाशीष। घर पर सभी को यथायोग्य कहना।

तुम्हारी बहन
शैफाली शर्मा

अथवा

'लक्ष्य को निशाना बनाओ, भटको नहीं' कथन का आशय समझाते हुए छोटे भाई को एक पत्र लगभग 80–100 शब्दों में लिखिए।

उत्तर :

35, विशाल नगर
कानपुर
दिनांक– 13 अक्टूबर, 2019

प्रिय रमेश
स्नेह!

आशा है, तुम आनंदपूर्वक होंगे। घर पर भी सब कुशल है। सब तुम्हें याद करते हैं। पिछली बार तुमने मुझे कहा था कि तुम डॉक्टर बनना चाहते हो। फिर कहा कि नहीं, अध्यापक बनोगे। आजकल तुम खिलाड़ी बनने की राह पर हो। हो सकता है, कल तुम्हारा मन फिल्मी हीरो बनने का हो जाए।

मेरी सलाह है कि इस भटकन पर विजय पाओ। एक दिन बैठकर तय करो कि तुम्हें किस ओर जाना है। मेरा अनुभव है कि सभी लक्ष्य अच्छे परिणाम ला सकते हैं। तुम्हें सब जगह संतुष्टि मिल सकती है। आवश्यकता है एक लक्ष्य की ओर सधी हुई नजरों से बढ़ने की। आज इधर, कल उधर होने से तुम तीर तो चलाओगे, परंतु वह चिड़िया की आँख पर नहीं लगेगा।

आशा है, तुम मेरा आशय समझ गए होंगे।

तुम्हारा भाई
अभिनव शर्मा

13. 'हीरो' कंपनी एक प्रसिद्ध कंपनी है। इस कंपनी में कुछ कर्मचारी के पद खाली हैं। इस पर एक विज्ञापन लगभग 25–50 शब्दों में लिखिए– 5

उत्तर :

आवश्यकता

हीरो प्राइवेट लिमिटेड कंपनी हेतु चार कर्मचारियों की आवश्यकता है जो मैकेनिकल काम की पूर्ण जानकारी रखते हों।

योग्यता: *बारहवीं कक्षा तथा दो वर्षों का अनुभव।*

वेतनमान: *आकर्षक तथा योग्यतानुसार।*

साक्षात्कार: *दिनांक 19 अक्टूबर, 2019 को सुबह 10.00 बजे से 12.00 बजे तक मिल सकते हैं।*

संपर्क-
4/6, नेहरू नगर,
दिल्ली।
दूरभाष नं.– 011–25835555

अथवा

आपके नगर जयपुर में नया वाटर पार्क खुला है, जिसमें पानी के खेल, रोमांचक झूलों, मनोरंजक खेलों और खान–पान की व्यवस्था है। एक विज्ञापन लगभग 25–50 शब्दों में तैयार कीजिए।

उत्तर :

समर वाटरपार्क

जिंदगी के सुहाने पलों का आनन्द लीजिए-

- तरह-तरह के पानी के खेल
- रोमांच से भरपूर झूले
- नए-नए खेलों का आनंद
- सुस्वादु, लजीज व्यंजनों और पेयों का मजा
- बच्चों, महिलाओं, प्रौढ़ों, बूढ़ों और युवा-युवतियों के लिए तरह-तरह के आनंदपूर्ण मनोरंजन!

दिन भर के लिए प्रति व्यक्ति टिकट मात्र 350 रुपये।

3 साल से कम बच्चों के लिए मुफ्त प्रवेश!

संपर्क :

सुभाष यादव, वाटरपार्क मैनेजर, दिल्ली रोड, जयपुर।

मोबाइल : 9898989866

Download unsolved Version of this solved paper from www.cbse.online

WWW.CBSE.ONLINE

This sample paper has been released by website www.cbse.online for the benefits of the students. This paper has been prepared by subject expert with the consultation of many other expert and paper is fully based on the exam pattern for 2019-2020. Please note that website www.cbse.online is not affiliated to Central board of Secondary Education, Delhi in any manner. The aim of website is to provide free study material to the students.